Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

जनरेशन गैप (पीढ़ी अंतराल) पर निबंध

आरव गुर्जर

प्रस्तावना

जनरेशन गैप एक प्राकृतिक क्रिया है। इस दिशा में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से अलग क्यों है? ऐसा कुछ है जो स्वाभाविक रूप से उनमें आता है और यह एक तरह से एक अच्छी बात है क्योंकि इस तरह से मानव प्रजाति विकसित हो रही है।

जनरेशन गैप-रिश्तों पर प्रभाव

नए विचार और तथ्य हमेशा अच्छे होते हैं। इस तरह हमारे चारों तरफ की दुनिया अलग-अलग स्तरों पर विकसित होती है। हालांकि दो पीढ़ियां विशेष रूप से माता-पिता और बच्चों के बीच सोच और विचारों में अंतर अक्सर संघर्ष का एक मुद्दा बन जाता है। इस संघर्ष की वजह से संबंधों में तनाव आ जाता है।

माता-पिता को अपने बच्चों से बड़ी उम्मीदें होती हैं। उनकी एक निर्धारित छवि है कि कैसे उनके बच्चों को उनकी परंपरा, मूल्यों के साथ-साथ उनके विस्तारित परिवार के अन्य सदस्यों से व्यवहार करना चाहिए। उन्हें लगता है कि वे जानते हैं कि उनके बच्चों को अपने जीवन में क्या करना चाहिए। अब समस्या तब होती है जब बच्चे के मन में एक अलग सोच बसी होती है (जो ज्यादातर मामलों में होती है)। ऐसा होने की वजह से संघर्ष शुरू होता है। यह कहना सही नहीं है कि माता-पिता हर बार पूरी तरह से गलत हैं। वे बड़े हैं और निश्चित रूप से अपने बच्चों के

ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

लिए आदर्श निर्देशक हैं और कई बार वे अपने बच्चों के लिए सही निर्णय भी लेते हैं। हालांकि युवा पीढ़ी शायद ही कभी इस चीज़ को समझ पाए। यह दुख की बात है कि जनरेशन गैप कई रिश्तों में खटास का कारण रहा है।

कैसे इस अंतर को भरा जाए?

श्ता दुनिया में सबसे सुंदर संबंध है। इसका प्यार से पालन पोषण करना चाहिए और देखभाल के साथ संभाला जाना चाहिए। यह देखना जरुरी है कि कैसे ये रिश्ते जनरेशन गैप की वजह से कमज़ोर पड़ रहे हैं।

ऐसा देखा जाता है कि पुरानी पीढ़ी हमेशा एक बेहतर निर्णायक और निर्णय निर्माता होने का दावा करती है और युवा पीढ़ी अक्सर ख़ुद को अपराधी की तरह महसूस करती है। यह समझने का समय है कि जो भी कुछ वे करते हैं न तो वे इसमें पूरी तरह से गलत हैं और ना ही पूरी तरह से सही हैं। वास्तव में इस मामले में सही और गलत की परिभाषा अलग-अलग पीढ़ियों के लिए अलग है। इसके लिए स्वीकृति और समझने की आवश्यकता है।

पुरानी पीढ़ी के लोगों को यह समझना चाहिए कि उनके बच्चे दूसरे युग में पैदा हुए हैं और इसलिए उनकी मानसिकता उनसे अलग है। माता-पिता और दादा-दादी को, उनके नियमों और विचारों को अंधाधुंध रूप से लागू करने के बजाय, ध्यान देना होगा कि उनके बच्चे क्यों अलग व्यवहार कर रहे हैं और अलग-अलग राय क्यों रखते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों की मनोदशा को समझने के लिए उनका दोस्त बनना चाहिए। दूसरी ओर बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। उन्हें अपने माता-पिता पर भरोसा करना चाहिए और उनके साथ अपने विचार साझा करना चाहिए। बच्चों को अपने माता-पिता से

ISSN 2454-2695
Volume 04 Issue 02
FEBRUARY 2018

बातचीत के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए और समझना चाहिए कि उनको उनके माता-पिता से मिलने वाली सलाह गलत नहीं है। यह उन्हें उनके जीवन में प्रगति करने में मदद करेगा।

माता-पिता को हर बार अपने बच्चों पर नज़र नहीं रखनी चाहिए और उन्हें हर चीज में टोकने की बजाए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को छूट देते समय कुछ सीमाएं निर्धारित करनी चाहिए जिसका बच्चों को भी सम्मान करना चाहिए। दो-तरफा संचार एक मजबूत संबंध का आधार है और दोनों माता-पिता और बच्चों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे इसे बनाए रखें। हर गंभीर मुद्दे पर चर्चा की जानी चाहिए और दोनों पार्टियों को इस पर बहस के बजाए एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

निष्कर्ष

जनरेशन गैप इसलिए होता है क्योंकि दुनिया लगातार बदलती रहती है। हमें यह समझना चाहिए कि अलग-अलग समय में पैदा हुए लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं। लोगों को एक-दूसरे पर अपने विचारों और विश्वासों को थोपने के बजाए एक-दूसरे के व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए।